घमण्डी चितकबरी बिल्ली

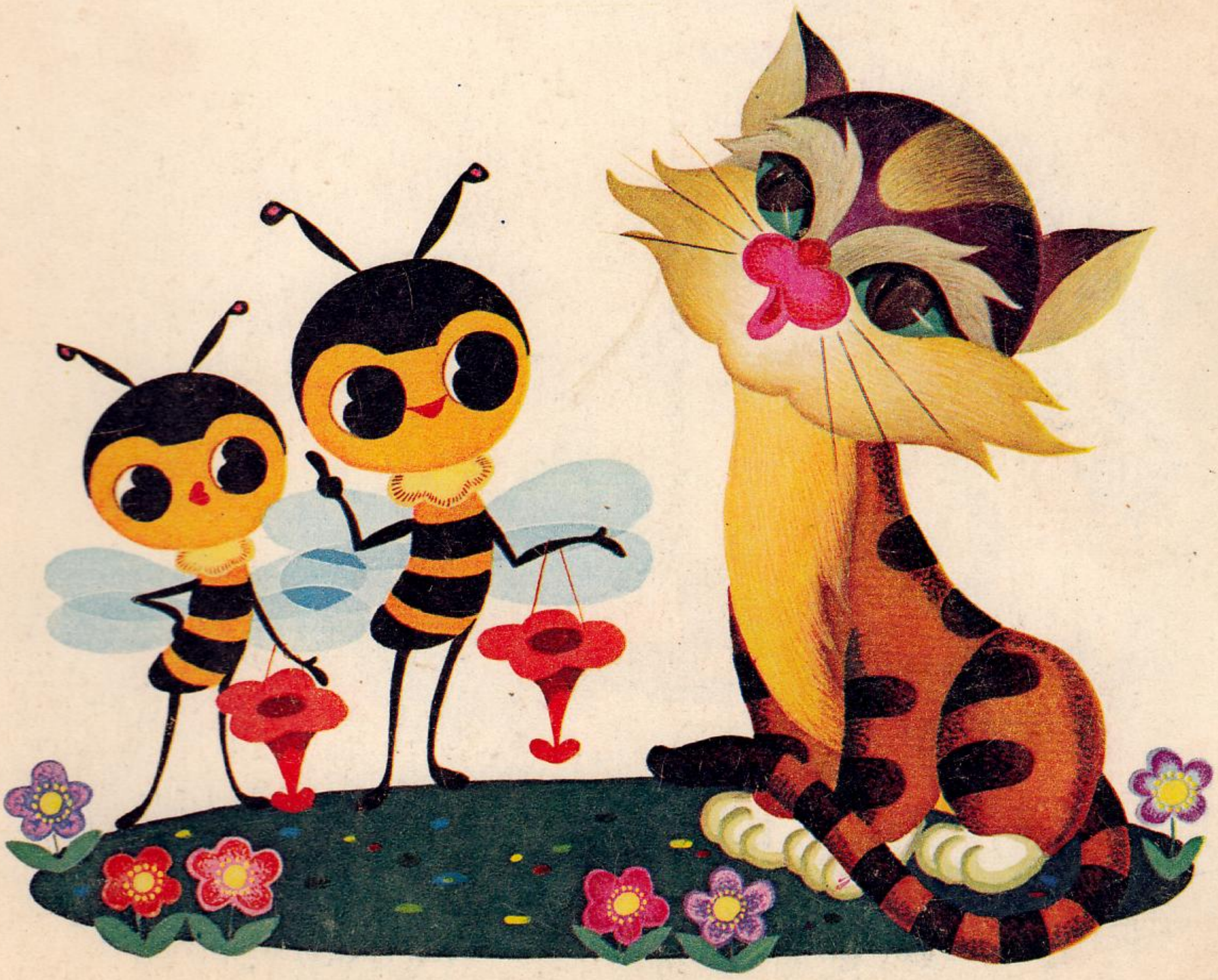

घमण्डी चितकबरी बिल्ली

शब्दांकन : कङ कङ
चित्रांकन : च्याङ छङभ्रान
ऊ ताएशङ

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेकिङ

प्रथम संस्करण १९८०

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह,
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेकिङ, चीन
चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

१. न्यू-न्यू को तरह-तरह के चित्र बनाने का शौक था। उसने पहली जून को, बाल-दिवस के उपलक्ष में आयोजित प्रदर्शनी के लिए एक छोटी-सी चितकबरी बिल्ली का चित्र बनाया। सभी लोगों की राय में वह चित्र बहुत ही बढ़िया था। सचमुच छोटी चितकबरी बिल्ली कितनी सजीव, सुन्दर और आकर्षक थी !

२. छोटी चितकबरी बिल्ली ने सोचा : मैं बहुत सुन्दर हूं। यहां इस चित्र में मौजूद रहने से क्या लाभ, जहां केवल प्रदर्शनी के दर्शक ही मुझे देख पाते हैं ? मुझे यहां से निकलकर बाहर जाना चाहिए, ताकि संसार का हर आदमी मेरे रूप को देख सके।

३. एक दिन जबकि प्रदर्शनी छुट्टी के कारण बन्द थी, वह चित्र से कूदकर बाहर आ गई और इधर-उधर घूमने लगी, ताकि प्रत्येक व्यक्ति उसे देखकर समझ ले कि संसार में सबसे सुन्दर बिल्ली वही है।

४. वह अभी ज्यादा दूर नहीं गई थी कि उसकी मुलाकात एक चूहे से हो गई। चूहा उसे देखकर डर के मारे थरथर कांपने लगा। छोटी चितकबरी बिल्ली ने बड़े तिरस्कार से उससे कहा : "तुम कितने डरपोक हो ! दूर हो जाओ मेरी नजरों से ! क्या तुम नहीं जानते कि मैं सारे संसार की सबसे सुन्दर बिल्ली हूं, और तुम्हारी जैसी बदसूरत चीज खाना बिलकुल पसन्द नहीं करती ?"

५. चालाक चूहे ने सपने में भी नहीं सोचा था कि वह उस भयानक संकट से इतनी आसानी से छुटकारा पा जाएगा। छोटी चितकबरी बिल्ली की बात सुनकर उसकी जान में जान आई तथा वह उसे और नजदीक से देखने लगा। तब उसे पता चला कि वह असली नहीं बल्कि एक चित्रित छोटी बिल्ली है। इससे उसकी हिम्मत कुछ और बढ़ गई।

६. चूहे ने सोचा : देखो तो सही, यह बेवकूफ अपने आप पर कितनी मुग्ध हो रही है। सचमुच महामूर्ख है ! फिर वह चिचियाकर बोला : "छोटी चितकबरी बिल्ली, तुम सचमुच बहुत सुन्दर हो। मैं कितना भाग्यशाली हूं जो आज तुम्हें देखने का अवसर मिला।"

७. "मुझे विश्वास है हर व्यक्ति तुम्हें देखना चाहेगा। तुम जल्दी ही संसार में घूमने-फिरने निकल पड़ो। खूबसूरत से खूबसूरत मोर भी तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता।"

८. चूहे की बात को सच मानकर, छोटी चितकबरी बिल्ली अपने को और महान समझने लगी। वह चूहे से बोली : "हां, मैं जल्दी ही यात्रा करने जा रही हूं। अपने सब साथियों को बता दो कि जो भी मुझे देखना चाहे वह जल्दी से यहां आ जाए।" चूहे ने सोचा, बिल्ली से पीछा छुड़ाने का यह अच्छा मौका है, और वह सिर पर पांव रखकर वहां से भाग खड़ा हुआ।

९. छोटी चितकबरी बिल्ली ने सोचा कि जल्दी ही बहुत-से चूहे उसके दर्शन करने के लिए आने वाले हैं, इसलिए वह जमीन पर और ज्यादा अकड़ के साथ बिलकुल सीधी बैठ गई।

१०. वह बड़ी देर तक उनकी प्रतीक्षा करती रही, लेकिन एक भी चूहा उसे देखने नहीं आया। तब उसने मन ही मन कहा : "वे इतने बदसूरत हैं कि मेरे सामने आने की हिम्मत नहीं करते। वे सब ईर्ष्या से मर जाएंगे।" वह उठी और वहां से चल पड़ी।

११. मैदान में तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। उन्हें देखकर छोटी चितकबरी बिल्ली ने सोचा : सब कहते हैं कि फूल बहुत खूबसूरत होते हैं, लेकिन सुन्दरता में वे मेरा मुकाबला कैसे कर सकते हैं ?

१२. अचानक उसे किसी की पुकार सुनाई दी : "तुम कहां जा रही हो ?" छोटी चितकबरी बिल्ली ने मुड़कर देखा। एक रंगीन तितली थी, जो फूलों के ऊपर नाच रही थी।

१३. छोटी चितकबरी बिल्ली रुक गई और सिर ऊंचा करके बोली : "ओ, रंगीन तितली, मैं तुम्हारी ही तलाश में जा रही थी। लोगों का कहना है कि तुम बहुत सुन्दर हो। क्या ख्याल है तुम्हारा, सुन्दरता में मेरी तुलना में तुम कहां ठहरती हो ? तुम्हें यह तो मालूम ही होगा कि मैं संसार में सबसे रूपवान छोटी बिल्ली हूं !"

१४. तितली ने उत्तर दिया : "नादान मत बनो। हम दोनों में तुलना कैसी ? तुम्हारे प्यारे-प्यारे रंग चित्रकार द्वारा ब्रुश से भरे गए हैं, जबकि मेरे रंग प्राकृतिक हैं।"

१५. तितली की इस बात से चिढ़कर छोटी चितकबरी बिल्ली बुड़बुड़ाई : "विनम्रता तुम्हें छू भी नहीं गई है। मैं तुमसे कहीं सुन्दर हूं, यह बात सच है। मेरे रंग कहीं से भी आए हों, तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं।" यह कहकर वह मुड़ी और बड़ी ऐंठ के साथ वहां से चल पड़ी।

१६. छोटी चितकबरी बिल्ली चलते-चलते खुले खेतों में पहुंच गई। स्वच्छ नीले आसमान के नीचे उन खेतों में गेहूं के सुनहरे पौधे लहरा रहे थे। पास में ही एक हराभरा जंगल था। वहां से कुछ दूरी पर कोहरे में लिपटे पहाड़ खड़े थे। लेकिन छोटी चितकबरी बिल्ली समझती थी कि उनमें से कोई भी चीज ऐसी नहीं है जो रंगों की सुन्दरता में उसका मुकाबला कर सके।

१७. वह एक तालाब के किनारे जा पहुंची जिसमें कमल के सुन्दर-सुन्दर फूल खिले हुए थे। लेकिन छोटी चितकबरी बिल्ली अपनी सुन्दरता पर इतनी आत्ममुग्ध हो गई थी कि उसे उन फूलों के बजाय पानी में केवल अपनी ही परछाईं दिखाई दी।

१८. छपाक ! अचानक तालाब में किसी कंकड़ के गिरने से पानी में बहुत-सी गोलाकार लहरियां बन गईं और छोटी चितकबरी बिल्ली की परछाईं गायब हो गई। वह चौंक पड़ी और चारों ओर देखने लगी।

१९. अरे, यह तो पेड़ पर बैठा हुआ एक भरतपक्षी है। वह खुशी से चहकते हुए बोला : "तुम वहां इतनी अकड़ के साथ बैठी हुई क्या कर रही हो ?" उसकी बात सुनकर छोटी चितकबरी बिल्ली को बड़ा गुस्सा आया। उसकी इच्छा हुई कि वह उस पक्षी को गर्दन से पकड़कर एक अच्छा सबक सिखा दे।

२०. लेकिन यह कहना आसान था, करना नहीं। वह दम्भयुक्त स्वर में बोली : "सुनो, मैं कोई साधारण बिल्ली नहीं हूं, बल्कि बाल-चित्र प्रदर्शनी में प्रदर्शित खूबसूरत चितकबरी बिल्ली हूं। मुझे देखो तो सही। और तो और, अगर तुम्हारी रानी – अमरपक्षी – मुझे देख ले, तो वह भी मेरे ऊपर लट्टू हो जाएगी।"

२१. भरतपक्षी जोर से चहकते हुए बोला : "इतनी डींग मत मारो। यदि तुम सुन्दर हो, तो इसलिए कि दूसरों ने तुम्हें सुन्दर बनाने के लिए मेहनत की है। अगर वह चित्रकार न होता जिसने तुम्हें बनाया है, और कागज, ब्रुश और रंग न होते, तो तुम्हारा कोई अस्तित्व ही नहीं होता। जरा कुछ समझदारी से काम लो।"

२२. भरतपक्षी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि छोटी चितकबरी बिल्ली नाराज होकर उसे पकड़ने के लिए तेजी से उछल पड़ी। लेकिन भरतपक्षी पहले से ही चौकन्ना था और वह तुरन्त पेड़ से उड़कर तालाब के बीच कमल के पत्ते पर जा बैठा।

२३. छोटी चितकबरी बिल्ली भरतपक्षी के पीछे-पीछे भागी और तालाब में कूदने लगी। लेकिन जैसे ही उसने अपना अगला पंजा पानी में रखा, उसका कागज तरबतर हो गया और उसके रंग उतरने लगे। उफ, कितने दुर्भाग्य की बात थी! वह लंगड़ी हो गई थी।

२४. छोटी चितकबरी बिल्ली उदास होकर पेड़ के नीचे लेट गई और अपने अगले पंजे को धूप में सुखाने लगी। वह सोच रही थी : मैं अत्यधिक सुन्दर हूं, इसीलिए भरतपक्षी मुझे देखकर ईर्ष्या से जल रहा है। यदि वह मेरे जैसा रूपवान नहीं है, तो इसमें मेरा क्या दोष है? कुछ भी हो, मैं ही संसार में सबसे सुन्दर प्राणी हूं।

२५. धूप में लेटे-लेटे छोटी चितकबरी बिल्ली का पंजा सूख गया। वह वहां से चलने को हुई, तभी उसकी नजर उन मधुमक्खियों पर पड़ी जो सड़क के किनारे उगे फूलों के बीच गुंजन कर रही थीं। उसने उनसे पूछा : "तुम लोग क्या कर रही हो ?" एक छोटी-सी मधुमक्खी ने गर्व से उत्तर दिया : "हम काम कर रही हैं।"

२६. छोटी चितकबरी बिल्ली को उसकी बात कुछ अजीब-सी लगी। वह बोली : "काम कर रही हो ? मैंने तो कभी कोई काम नहीं किया, फिर भी प्रदर्शनी में सब लोगों ने मेरी भूरि-भूरि प्रशंसा की। आखिर तुम लोग इतना कठोर परिश्रम क्यों करती हो, इतनी तकलीफ क्यों उठाती हो ? तुम लोग बिलकुल बेवकूफ हो !"

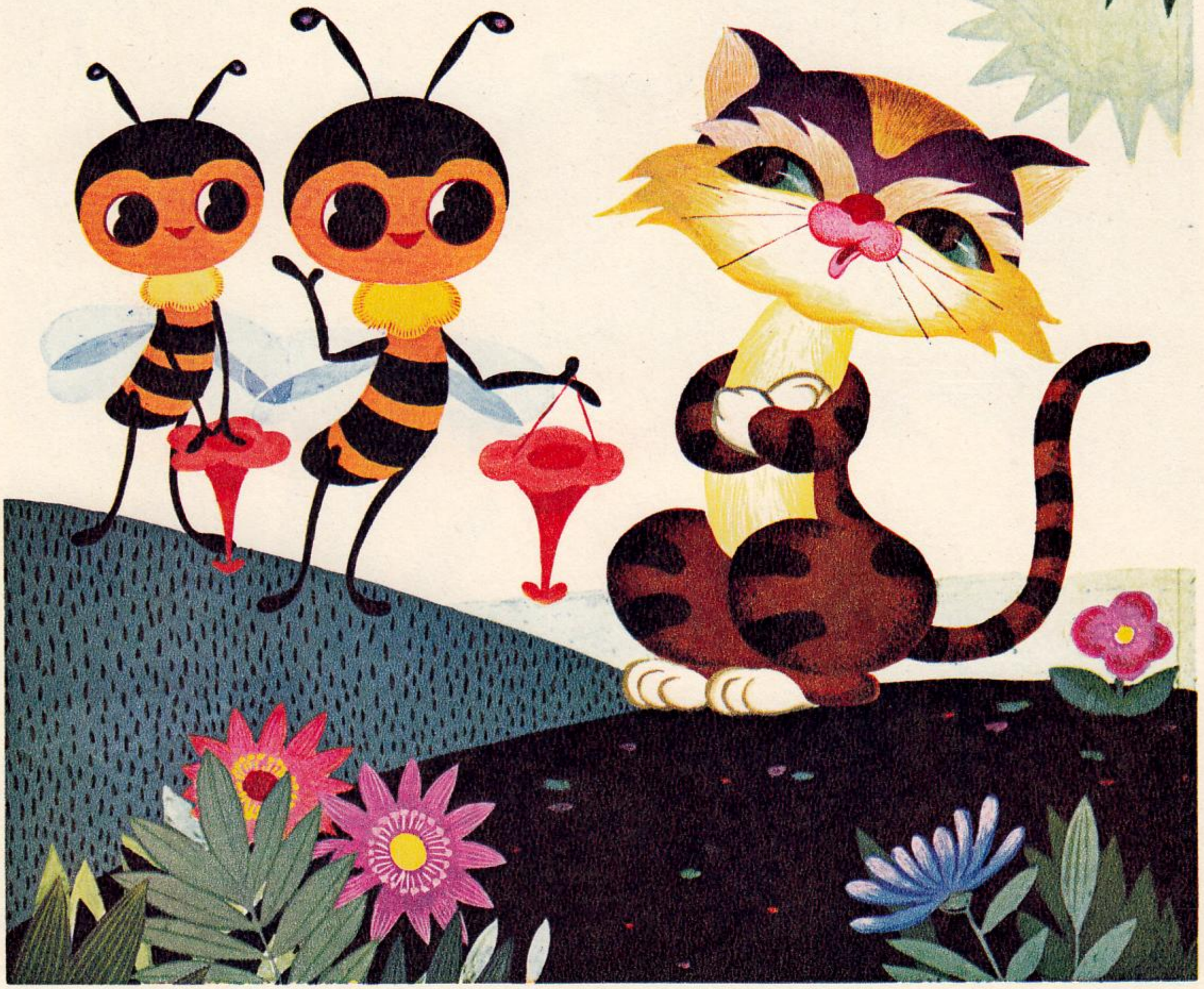

२७. मधुमक्खी ने भिनभिनाते हुए जवाब दिया : "यदि तुम काम नहीं करतीं, तो अपना जीवन-निर्वाह कैसे करती हो ? तुम बिना किसी काम-धाम के ही इधर-उधर आवारागर्दी और बकवास करती घूमती रहती हो। क्या तुम्हें शर्म नहीं आती ? यदि तुम सचमुच सुन्दर हो, तो इसका श्रेय तुम्हें नहीं बल्कि न्यू-न्यू को है, जिसने तुम्हें कागज, ब्रुश और रंगों से इस प्रकार चित्रित किया है।"

२८. मधुमक्खी की बात समाप्त होने से पहले ही छोटी चितकबरी बिल्ली उनकी ओर लपकी और उन्हें वहां से भगा दिया। "जाओ! दूर हो जाओ यहां से! मुझे तुम्हारे उपदेश की जरूरत नहीं!"

२६. "ये सब लोग मुझसे इस तरह बात क्यों करते हैं ? हो न हो मेरे इन रंगों ने ही मेरे बारे में तरह-तरह की अफवाहें फैला दी हों।" उसने अपने शरीर को जोर से हिलाया और रंगों को झाड़ते हुए कहा : "दूर हो जाओ मेरे बदन से, मैं तुम्हारे बिना और अच्छी हो जाऊंगी।"

३०. उसके शरीर के रंग छोटे-छोटे कणों के रूप में झड़कर नीचे गिर पड़े। उन रंगों ने उदास होकर उससे कहा : "तुम हमें क्यों भगा रही हो ? देख लेना, तुम बहुत पछताओगी।" छोटी चितकबरी बिल्ली झुंझलाकर बोली : "कभी नहीं ! अच्छा अलविदा।"

३१. अपने रंगों को झाड़ देने के बाद, छोटी चितकबरी बिल्ली बिलकुल सफेद हो गई। वह सोचने लगी : मेरा इस रूप में रहना कहीं अच्छा है। देखती हूं कि मेरी सुन्दरता से इनकार करने के लिए लोग अब और क्या बहाना ढूंढ़ते हैं। इसके बाद उसका घमण्ड और बढ़ गया तथा वह पहले की तरह निरुद्देश्य घूमने लगी।

३२. तितली, भरतपक्षी और मधुमक्खियों ने एक जगह इकट्ठा होकर उस घमण्डी चितकबरी बिल्ली की मदद करने का कोई उपाय सोचने का निश्चय किया, ताकि उसके अहंकार को दूर किया जा सके। उसी समय छोटी चितकबरी बिल्ली भी मटरगश्ती करती वहां आ पहुंची और उन्हें देखकर चिल्ला पड़ी : "देख लो ! बिना रंगों के क्या मैं और भी ज्यादा सुन्दर नहीं लगने लगी हूं ?"

३३. भरतपक्षी ने तुरन्त जवाब दिया : "तुम रंगों के बिना तो जैसे-तैसे अपना काम चला लोगी, लेकिन कागज के बिना नहीं।" यह सुनकर छोटी चितकबरी बिल्ली आपे से बाहर हो गई और जोर से चिल्लाई : "कागज, तुम भी दूर हो जाओ।" बेचारा कागज क्या करता? उसे वहां से जाना ही पड़ा।

३४. रंगों और कागज के निकल जाने के बाद अब छोटी चितकबरी बिल्ली के शरीर में न्यू-न्यू द्वारा खींची गई कुछ रेखाओं के अलावा और कुछ बाकी नहीं बचा था, फिर भी उसने डींग मारना जारी रखा : "अब तो मैं पारदर्शी हो गई हूं तथा पहले से भी ज्यादा सुन्दर लगने लगी हूं।" नटखट मधुमक्खी ने उसे चिढ़ाते हुए कहा : "लेकिन तुम अब भी इन रेखाओं पर निर्भर हो।"

३५. छोटी चितकबरी बिल्ली उकसावे में आकर बोली : "ऐ रेखाओ, तुम भी चली जाओ, . . ." अरे ! यह क्या हुआ ? उसके कंधे की रेखा मिट गई थी। उसे लगा कुछ न कुछ गड़बड़ जरूर है। वह बेहद घबरा गई और म्याऊं-म्याऊं की आवाज में बोली : "यदि मेरी सभी रेखाएं चली गईं, तो मेरा अन्त हो जाएगा . . ." उसे इस प्रकार गिड़गिड़ाते देख सभी लोग हंसने लगे।

३६. तब मधुमक्खी बोली : "हंसो मत ! अभी-अभी हम सब ने निश्चय किया था कि इसे समझा-बुझा कर इसकी कमजोरी को दूर करने की कोशिश करेंगे। बोलो, छोटी चितकबरी बिल्ली, तुम्हारा क्या ख्याल है ?" छोटी चितकबरी बिल्ली ने लज्जित होकर अपना सिर नीचा कर लिया। "अब मैं समझ गई हूं। सच्ची सफलता सब लोगों के कठोर परिश्रम से ही मिलती है।"

३७. "बिलकुल ठीक !" सब लोग खुशी से बोल पड़े। अब जबकि छोटी चितकबरी बिल्ली ने अपनी गलती महसूस कर ली थी, सब ने अलग-अलग दिशा में जाकर उसके खोए हुए रंगों और कागज को ढूंढ़ा, ताकि छोटी चितकबरी बिल्ली पहले की तरह सुन्दर बन जाए।

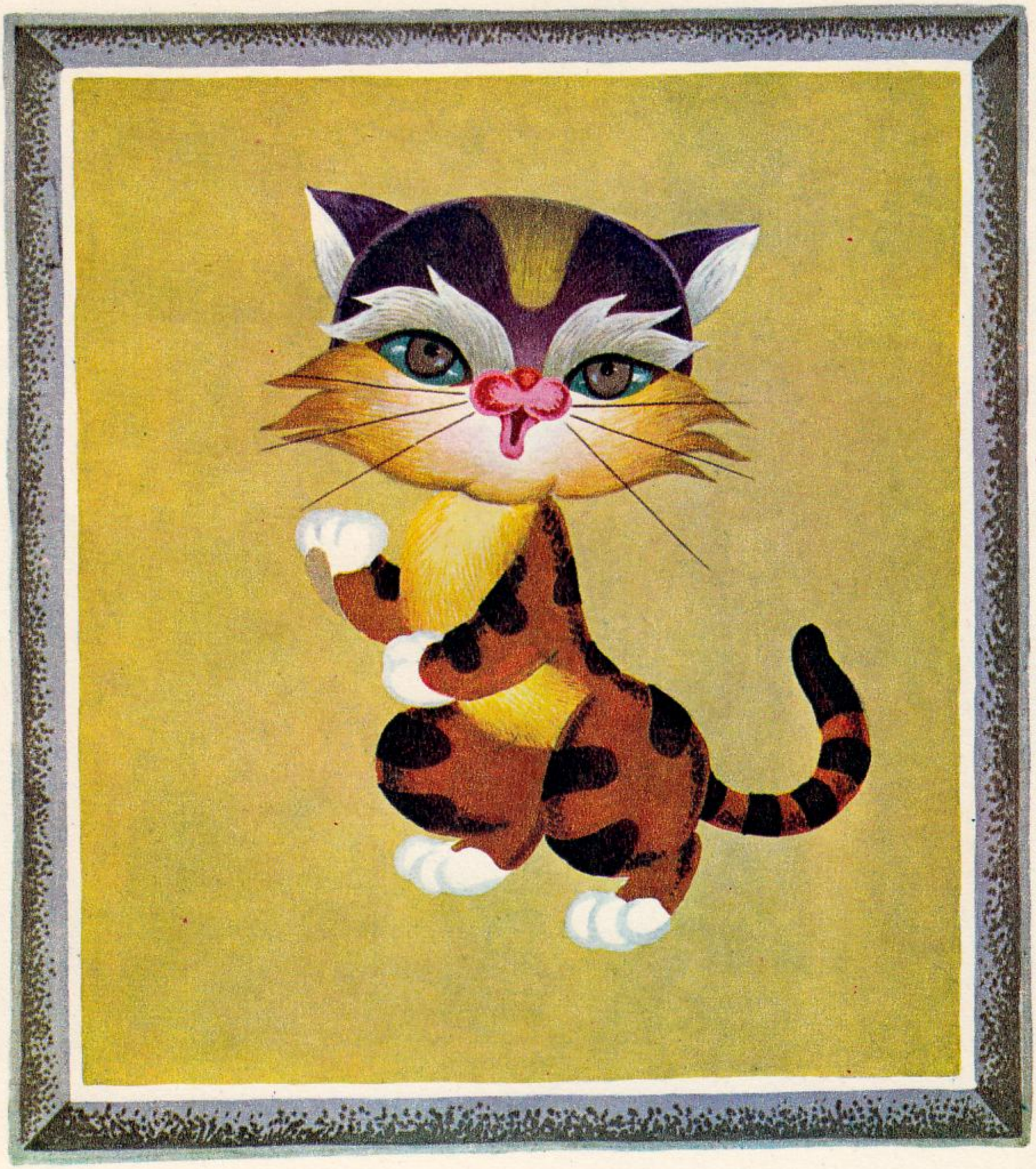

३८. इस प्रकार छोटी चितकबरी बिल्ली फिर चित्र में वापस आ गई। वह पहले जैसी ही रूपवान थी तथा प्रत्येक व्यक्ति उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो जाता था। लेकिन छोटी चितकबरी बिल्ली अक्सर अपने आपको याद दिलाती रहती थी : "गर्व करने के लिए मेरे पास आखिर है क्या ? सच्ची सफलता तो सब लोगों के कठोर परिश्रम से ही मिलती है।"

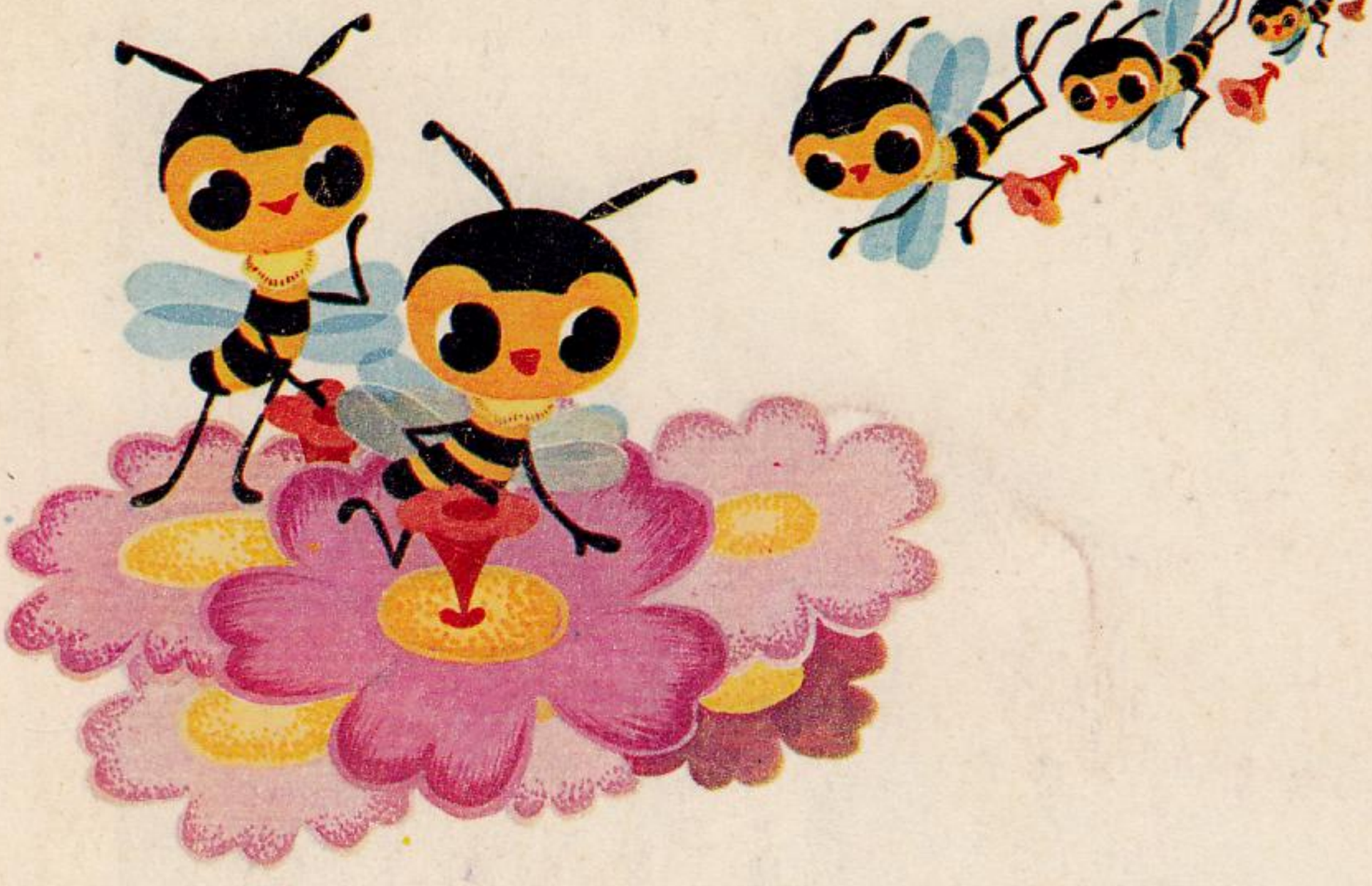

骄 傲 的 小 花 猫

耿 耿 编

姜成安

吳带生 绘

*

外文出版社出版

中国北京百万庄路24号

1980年（20开）第一版

编号：（印地）8050—1991

00075

88—H—154P